प्रातः क्लास 12/4/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

ओमशांति। अभी बच्चों को घर भी याद पड़ता है। बाप तो यही बात सुनावेंगे घर की और राजधानी की और बच्चे भी इन बातों को समझते हैं कि हमारा घर कौन सा है। हम आत्माओं का घर कौन सा है। हम आत्माएँ क्या है यह भी अच्छी रीत समझ गए हो। किसने समझाया है? बेहद के बाप ने। हरेक भाषा में तो बहुत सहज है बाबा–बाबा समझने का। बच्चे समझ गए हैं कि बाबा हमको आकर पढ़ाते हैं। बाप कहाँ से आते हैं? परमधाम से। ऐसे नहीं कहेंगे, पावन बनाने कोई पावन दुनिया से आते हैं। नहीं। बाप कहते हैं मैं सतयुगी पावन दुनिया से नहीं आता हूँ। मैं तो घर से आया हूँ, जिस घर से तुम बच्चे भी आए हो पार्ट बजाने। मैं भी ड्रामा प्लैन अनुसार हर 5000 वर्ष बाद घर से आता हूँ। मैं रहता ही हूँ घर में, परमधाम में। बाप समझाते भी ऐसे सहज हैं जैसे कि कोई शहर से, गांव से आया हूँ। कहते हैं जैसे तुम आए हो पार्ट बजाने, हम भी वहाँ से आए हैं पार्ट बजाने ड्रामा प्लैन अनुसार। मैं नॉलेजफुल हूँ। सभी बातों को मैं जानता हूँ ड्रामा प्लैन अनुसार। कल्प–2 मैं ही तुमको यह बातें समझाता हूँ जब तुम काम–चिक्षा पर चढ़ कर काले हो भस्म हो जाते हो। आग में मनुष्य काले हो जाते हैं ना। तुम भी सांवरे हो गए हो। जब तुम गोरे थे तो शरीर भी गोरा था। अभी शरीर भी सांवरा है। यथा राजा–रानी सांवरे तथा प्रजा। तुम बच्चे कितना अच्छे थे। महाराजा–महारानी ल०ना० कितने अच्छे थे। इनकी सारी डिनायस्टी काम चिक्षा पर चढ़ने से फिर सांवरे बन पड़ती है। पहले नम्बर में जो गोरे थे वही फिर काले बने हैं। ल०ना०, राम–सीता आदि को दिखलाते भी ऐसे ही हैं। कहाँ काला, कहाँ गोरा बनाते हैं। दोनों ही निशानियाँ हैं, सिर्फ अर्थ को ही नहीं समझते। तुम बच्चे अभी राज़ को समझ गए हो। सभी काम चिक्षा पर बैठ काले हो गए हैं। ताकत ठंडी हो गई है। आत्मा की बैटरी ऐसी न हो जो एकदम डिसचार्ज हो जाए और मोटर खड़ी हो जाए। इस समय सभी की डिसचार्ज होने का समय आ गया है, सारे मनुष्य मात्र के। तब ही बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं आता हूँ। ऐसे भी नहीं आने से ही बहुत बच्चे एडॉप्ट हो जाते हैं। थोड़े–2 हो एडॉप्ट होते जाते हैं। जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म और चंद्रवंशी के थे फिर उन्हों की ही बैटरी चार्ज होती है। तुम्हारी बैटरी अभी चार्ज होनी है ज़रूर। ऐसे भी नहीं सुबह को यहाँ आकर बैठने से बैटरी चार्ज हो सकेगी। नहीं। बैटरी चार्ज तो उठते–बैठते, चलते–फिरते हो सकती है याद में रहने से। तुम पहले–2 पवित्र आत्मा सतोप्रधान थे। सच्चा सोना, सच्चा जेवर था। अभी तो तमोप्रधान बने हो। अभी फिर आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। यह तो बड़ी सहज बात पवित्र होने लिए। इसको योग की भट्ठी भी कह सकते हैं। सोने को भट्ठी में डालते हैं। यह है सोने को शुद्ध बनाने की भट्ठी। बाप को याद करने की (भट्ठी) को याद रखनी है। पवित्र तो ज़रूर बनना ही है। याद नहीं करेंगे तो उतना पवित्र नहीं बनेंगे। फिर हिसाब–किताब तो चुक्तू करना ही है; क्योंकि कयामत का समय है न। सभी को हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस घर जाना है। बुद्धि में घर की याद भी बैठी हुई है। और किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। वह तो ब्रह्मा को ही ईश्वर कह देते हैं। उसको घर नहीं समझते हैं। तुम इस बेहद के ड्रामा के एक्टर्स हो। ड्रामा को तो तुम अच्छी रीत जान गए हो। बाप ने समझाया है अभी 84 का चक्र पूरा होता है। अभी जाना है अपने घर। आत्मा अभी पतित है इसलिए घर जाने लिए पुकारती है– बाबा, पावन बनाओ। नहीं तो हम जा नहीं सकते। तो बाप ही बैठ यह बातें बच्चों को समझाते हैं। यह भी बच्चे समझ गए हैं सभी उनको पिता ही पिता कहते हैं। ऐसे भी नहीं टीचर भी कहते। यूँ तो कृष्ण को टीचर ... हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो कृष्ण तो खुद ही पढ़ता था सतयुग में। कृष्ण कब किसका टीचर बना नहीं है। ऐसे भी नहीं पढ़कर फिर टीचर बना। नहीं। कृष्ण के बचपन से लेकर बड़ेपन तक सारी 84 जन्मों की कहानी तुम बच्चे समझ जाते हो। और लोग तो कृष्ण को भगवान कहते हैं। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राम के कहेंगे जिधर देखो राम ही राम है। सूत ही मूँझ गया है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम भी अभी

समझते जाते हो। भारत का यह प्राचीन योग और ज्ञान मशहूर है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर है ही एक बाप। वह तुम बच्चों को ज्ञान देते हैं तो तुमको भी ज्ञान सागर कहेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सागर कहें वा नदी कहें, पानी तो फिर भी सागर से आता है। वह है पानी की गंगाएँ। तुम हो ज्ञान गंगाएँ। बड़े नहरे भी हैं। इस हालत में ज्ञानवान ही कहेंगे। बाबा ने समझाया है यहाँ मेल–फिमेल का प्रश्न नहीं है। जैसे बाप ज्ञान सागर है, बाप के बच्चे भी ज्ञान सागर है। आत्मा ही ज्ञान सुनती है। इसमें मेल–फिमेल की बात नहीं। वह भी ज्ञान सागर परमआत्मा है। यह आत्मा भी उन द्वारा मास्टर ज्ञान सागर बनती है। गंगाएँ भी नहीं कहा जाए। इससे भी मूँझ हो जाती है। मास्टर ज्ञान सागर ही कहना ठीक है। तुम सभी बच्चे हो। बाप बच्चों को पढ़ाते हैं। फिमेल की बात ही नहीं। मास्टर ज्ञान सागर कहेंगे आत्मा के रूप में। गंगाएँ फिर तो नाले भी हो। नाला अक्षर अच्छा नहीं है। इसलिए मास्टर ज्ञान सागर ही कहें। वर्सा भी तो तुम आत्माएँ लेते हो। इसलिए अभी बाप कहते हैं– बच्चे, अभी देही अभिमानी बनो। अपन को आत्मा समझो। जैसे मैं परमआत्मा ज्ञान का सागर हूँ, वैसे तुम भी मास्टर ज्ञान के सागर। उनको परमपिता कहा जाता है। ड्रामा में उनकी ड्युटी सबसे ऊँची है। राजा–रानी की ड्युटी सबसे ऊँची होती है ना। तुम्हारी भी ऊँच रखी गई है। यहाँ तुम समझते हो हम आत्माएँ पढ़ती हैं। परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। मेल–फिमेल अलग–2 की कोई बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं सभी आत्माओं को पढ़ाता हूँ। इसलिए अभी देही–अभिमानी बनो। सभी ब्रदर्स हो जाते। मास्टर ज्ञान सागर ही कहेंगे। बच्चे को भी मास्टर कहते हैं। मालिक बन जाते हैं। बाप भी कितनी मेहनत करते हैं। अभी तुम आत्माएँ ज्ञान ले जाती हो, फिर वहाँ प्रारब्ध चलती है। वहाँ तो सभी का ब्रदरली प्रेम रहता है। ब्रदरली प्रेम बहुत अच्छा चाहिए। किसको रिगार्ड देना, किसको नहीं देना, ऐसा नहीं। सभी भाई हैं ना। भाई एक/दो में भाईपने का रिगार्ड नहीं देते हैं। नाम तो गाया हुआ है ना कहते हैं सभी भाई–2 हैं। हिन्दू–मुसलमान भाई–2 हैं। बहन–भाई नहीं कहते। भाई–2 कहना ठीक है। आत्मा यहाँ पार्ट बजाने आती है। वहाँ भी भाई–2 होकर रहते हैं। घर में ज़रूर सभी भाई–2 होकर रहेंगे। भाई–बहन का चोला तो यहाँ ही छोड़ना पड़ता है। भाई–2 का ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। आत्माओं को पढ़ाते हैं। देखना भी ऐसे हैं। आत्मा भृकुटि के बीच में रहती है तो तुमको भी यहाँ नज़र डालनी होती है। हम आत्मा शरीर रूपी तख्त पर बैठे हैं यहाँ। यह सिंघासन वा अकाल तख्त ठहरा। आत्मा को कब काल खाता नहीं। सभी के तख्त यहाँ हैं भृकुटि के बीच में। यह तख्त है जिस पर वह अकाल आत्मा बैठती है। कितनी समझ की बात है। अपन को आत्मा समझना है। बच्चे में भी आत्मा जाती है तो भृकुटि के बीच में ही है। वह छोटा तख्त फिर बड़ा तख्त होता है। बच्चों की बुद्धि में है हम आत्मा एक शरीर छोड़ फिर गर्भ में जावेंगे। भृकुटि में जाकर प्रवेश करेंगे। बाप तो सभी दुखों से दूर कर देते हैं। (सज़ा) आदि कुछ भी नहीं। दुख की बात ही नहीं। यहाँ गर्भ जेल में आत्मा को भोगना भोगनी पड़ती है। इसलिए अंजाम करती है हम फिर कब पाप नहीं करेंगी। आधा कल्प पापात्मा बनना ही होता है। अभी बाप द्वारा फिर पावन ..... बनती हो। पतित से पावन। जो बहुत दान–पुण्य आदि करते हैं उनको पुण्यात्मा कहते हैं। तुम ऐसे नहीं कहेंगे यह पुण्यात्मा है। नहीं। पवित्र आत्मा है। वहाँ भी पवित्र आत्मा है। हाँ, यह ज़रूर है दान–पुण्य भी किया है, पवित्र आत्मा भी है, पुण्यात्मा भी है। यहाँ अपवित्र आत्मा पापात्मा है। अक्षर भी (शुद्ध) निकलने हैं जिससे अर्थ पूरा निकले। भारत का नाम मशहूर है। कहते हैं भारत में जितना दान–पुण्य करते हैं इतना और कहाँ नहीं। तुम तन–मन–धन सभी कुछ बाप को दे देते हो। तुम यहाँ ही बाप को सब कुछ अर्पण कर देते हो। इतना दान करने कोई जानता नहीं। दान लेने और देने वाला भी आता यहाँ भारत में ही है। यह सभी सूक्ष्म महीन बातें हैं जो भारत में ही होती हैं। भारत कितना अविनाशी खण्ड बना हुआ है। और सभी खण्ड खत्म हो जाने हैं। यह ड्रामा कैसे बना हुआ है वह भी

तुम्हारी बुद्धि में है। दुनिया नहीं जानती। इसको नॉलेज ही कहें तो और ही अच्छा है। नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम। इनसे इनकम बहुत है। बाप को याद करो यह भी नॉलेज देते हैं। फिर सृष्टि–चक्र की यह नॉलेज देते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो यह भी नॉलेज है। यह ज्ञान कब तुमने सुना न है। अभी तुम जानते हो हम जन्म–जन्मांतर भक्तिमार्ग में रहे हैं। मनुष्यों द्वारा ही सुनते आए हैं। विदेही से नहीं सुना है। अभी बाप तुम बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं– अपन को आत्मा समझो। तुम वर्सा भी बाप से लेते हो। शरीर का अभिमान निकल जाना चाहिए। हम सभी ब्रदर्स बाप से वर्सा ले रहे हैं ज्ञान का, पढ़ाई का, याद का। इसमें मेहनत है। हम आत्माओं को अभी वापस जाना है। शरीर का भान निकालना है। इस पुराने शरीर से और पुरानी दुनिया से उपराम रहना है। देह सहित जो कुछ भी देखते हो वह सभी खलास हो जाना है। अभी हम ट्रान्सफर होते हैं। यह तो बाप ही बता सकेंगे। कोई मनुष्य तो बता न सके। सभी आत्माओं का बाप ही बतलाते हैं। मेहनत लगती है। बहुत बड़ा इम्तहान है, जो बाप ही आकर पढ़ाते हैं। इसमें किताब आदि भी कोई बात नहीं रहती। बाप को याद करना है। बाप 84 का चक्र तो समझा देते हैं। ड्रामा के डक्युरेशन(ड्युरेशन) को भी नहीं जानते हैं। बिल्कुल घोर–अंधियारे मे हैं। अभी तुम जागे हो। मनुष्य तो जागते ही नहीं हैं। कितनी मेहनत करते हो। फिर भी विश्वास करते नहीं हैं कि भगवान आकर इन्हों को पढ़ाते हैं। ज़रूर कोई में आवेंगे ना। उन्होंने फिर कृष्ण को पकड़ लिया है। जो बैठ किताब बनाई तो सोचा होगा किसका नाम देवे। जानते तो कुछ भी नहीं हैं। चित्र भी कैसे बैठ बनाए हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर (का आपस) में कनेक्शन है क्या। कुछ भी नहीं जानते। अभी बाप आत्मा को ज्ञान देते हैं। राय देते हैं ऐसे–2 करो, जो मनुष्य समझ जाए। तुम्हारे लिए बहुत सहज है। नम्बरवार तो है ही। स्कूल में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। राजाई में नम्बरवार होते हैं। इस पढ़ाई से बड़ी राजधानी स्थापन हो रही है। यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में है। पुरुषार्थ ऐसा करना है हम राजा बने। इस समय तुम पुरुषार्थ करते हो, फिर कल्प–2 (करते रहेंगे)। इनको ईश्वरीय लाटरी कहा जाता है। कोई को थोड़ी, कोई को बड़ी लाटरी होती है। राजाई की भी लाटरी है ना। जो आत्मा जैसा कर्म करती है ऐसा लाटरी मिलती है। कोई गरीब बनते हैं, कोई क्या बनते हैं। सभी को लाटरी तो मिलती है ना। इस समय तुम बच्चों को सारी लाटरी बाप से मिलती है, जैसा जो पुरुषार्थ करेंगे। इस समय के पुरुषार्थ पर ही बहुत मदार है। नम्बरवन पुरुषार्थ है याद की। ..... योगबल से ही स्वच्छ बनेंगे। वह पढ़ते भी अच्छा है। पवित्र भी (बन) जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो जितना हम बाप को याद करेंगे उतना ही नॉलेज की धारणा होगी और बहुतों को समझा कर अपना प्रजा बनावेंगे। कहाँ भी तुम जाओ, भल कोई भी धर्मवाला हो, जब भी तुम मिलते हो उनको बाप का परिचय देना है। आगे चलकर वह .... देखेंगे विनाश सामने खड़ा है। तो विनाश के समय (हमेशा) मनुष्यों को वैराग्य हो जाता है। तुमको सिर्फ कहना है तुम तो आत्मा हो ना। गॉड फादर किसने कहा? आत्मा ने। (अभी) बाप आत्माओं को कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। वह बाप ही सर्व का (लिबरेटर) है। तुम अपन को आत्मा बाप को याद करो तो तुम्हारा गाइड बन तुमको ले जावेंगे मुक्तिधाम। बाकी आत्मा तो कब विनाश होती नहीं। तो मोक्ष का भी प्रश्न नहीं उठता। हरेक को पार्ट ज़रूर बजाना ही है। आत्माएँ सभी हैं अविनाशी। विनाश होने की नहीं हैं। यह भी ड्रामा चलता रहता है। जो भी 500 करोड़ आत्माएँ हैं सभी अविनाशी हैं। आत्मा कब विनाश नहीं होती। बाकी वहाँ जाने लिए बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। (घर) में चले जावेंगे। यह सभी आखरीन समझेंगे ज़रूर। बड़े–2 सन्यासी भी समझेंगे। वापस तो सभी को जाना ही है। तुम्हारा पैगाम सभी की बुद्धियों में ठका करेगा। तब तो गायन है अहो प्रभु तेरी लीला..... तुम्हारी गत–मत तुम्हीं जानो। जानेंगे तो ... किसको मत देंगे ना कि अपने पास रख देंगे। उनकी मत से सद्गति .... होती है ज़रूर बतावेंगे ना। वह फिर कहते हैं

तुमरी गत–मत तुम्हीं जानो। हम नहीं जानते हैं। यह भी कोई बात नहीं। अभी बाप कहते हैं इस श्रीमत से तुम्हारी गति होती है। तुमरी गत–मत.... अभी तुम समझते हो जो बाबा जानते हैं वह हमको सिखलाते हैं। तुम कहेंगे हम बाबा को जानते हैं। वह .... हैं कि तुमरी गत–मत तुम्हीं जानो। तुम ऐसे नहीं कहेंगे। बुद्धि में बैठने में भी टाइम लगता है। फट से नहीं बुद्धि में आता है। सम्पूर्ण तो कोई भी नहीं बना है। सम्पूर्ण बन जाए फिर तो यहाँ चले जावें। जाना तो नहीं है। सम्पूर्ण कोई भी बन नहीं सकते हैं झट। यह भी कहते हैं मुझे अजन बनना है। पुरुषार्थ कर रहे हैं। भल पहले ज़ोर से वैराग्य आया। देखा डबल सिरताज बनता हूँ। यह भी ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने दिखाया मैं तो झट खुश हो गया। खुशी के मारे सब कुछ छोड़ दिया। विनाश भी देखा और चतुर्भुज रूप भी देखा। समझा, अभी राजाई मिलती है। थोड़े ही रोज़ में यह सभी विनाश हो जावेंगे। ऐसी नशा चढ़ गया; परन्तु अभी तो देखने में आता है यह तो बहुतों को राजाई मिलनी है। एक हम जाकर क्या करेंगे। यह ज्ञान अभी मिलता है। पहले तो खुशी का पारा चढ़ गया, अभी समझते हो यह तो ठीक है। राजधानी बनेगी। बाकी पुरुषार्थ तो सभी को करना है। तुम पुरुषार्थ के लिए ही बैठे हो।

सुबह को तुम याद में बैठे थे। यह बैठना भी अच्छा है। जानते हो बाबा आया। बाप आया, दादा आया। वह तो गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। एक–2 बच्चे को देखते रहेंगे। एक–2 को बैठ कर साकाश देते हैं। योग की अग्नि है ना। योग अग्नि से उनके विकर्म विनाश हो जाए। जैसे कि बैठकर लाइट देते हैं। एक–2 आत्मा को सर्चलाइट देते जावेंगे। बैठेंगे ही ऐसे। या बाप कहते हैं मैं ऐसे बैठता हूँ। ऐसे बैठ कर एक–2 आत्मा को करंट देता हूँ तो ताकत भरती जाए। अगर किसकी बुद्धि बाहर में भटकती होगी तो फिर करंट को कैच कर न सकेंगे। बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती रहेगी। उनको मिलेगा फिर क्या? कहते हैं ना मिठरा घूरत घूराए (प्यार करो तो प्यार करेंगे)। तुम प्यार करेंगे तो प्यार पावेंगे। बुद्धि बाहर भटकती रहेगी तो बैटरी चार्ज ही नहीं होगी। बाप बैटरी को चार्ज करने आते हैं। उनका फर्ज है सर्विस करना। बच्चे सर्विस अंगीकार करते हैं वा नहीं वह तो उनकी आत्मा ही जाने। किस खयालात में बैठते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मैं भी परम आत्मा हूँ। मुझ बैटरी साथ तुम योग लगाते हो। मैं भी साकाश दूँगा। बहुत ही प्यार से एक/दो को साकाश देता हूँ। तुम तो बैठेंगे बाबा को याद करने। बाप कहते हैं मैं एक–2 आत्मा को साकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। जो पकड़ने वाला होगा वह पकड़ेंगे और उनकी बैटरी भी चार्ज होगी। दिन–प्रतिदिन युक्तियाँ तो समझाते रहते हैं। बाकी समझना, न समझाना वह तो नम्बरवार स्टूडेंट पर है। बहुत तरावत माल मिलता है कोई हज़म भी कर सके ना। बड़ी भारी लाटरी है। जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर का लाटरी है तो उस पर पूरा अटेंशन देना चाहिए।

बाप से करंट ले रहे हैं। बाप भी भृकुटि के बीच में बैठा है ना। तुमको भी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है, न कि ब्रह्मा की आत्मा को। हम उनसे योग लगाकर बैठते हैं। इनको देखते हुए भी हम उनको देखते हैं। आत्मा की बात है ना। अच्छा, बच्चों को बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।

पत्र की कॉपी :– कलकत्ते दोनों रूहानी वण्डरफुल ईश्वरीय विश्व–विद्यालय के पद्म–पद्म भाग्यशाली पुरुषार्थी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा का यादप्यार, बाद समाचार कि दिन–प्रतिदिन पद्मापदमभाग्यशाली विश्व के मालिक बनने वाले ज्ञान गुलजारी फूल अच्छे ही ज्ञान और योग की खूशबुएँ निकाल रहे हैं। ऐसे आपसमान भी बनते–बनाते रहते हैं। हठयोगी हद के सन्यासियों के सामने सहज राजयोगी बेहद के सन्यास का मुकाबला बहुत अच्छा है। जो एक दिन बेहद के सामने सिर झुकाना पड़ना ही है। अभी रावण राज्य में उनका राज्य है। उनको संगमयुग का पता न है। अच्छा, बच्चों देखना कहाँ माया बिल्ली कोई पाइंट में हरा न दे। पूरी जीत पहननी है। जो 5 विकारों पर जीते सो जगत जीत नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो मुरली सुनाते हैं सो मुरली पहले पढ़ अर्थ पूरा समझ बाद में समझाना है। अच्छा, पत्र कूंज का, सर्विस समाचार का और भारती सर्विस समाचार का पाया। आपस में बहुत–2 प्यार से चलना है। प्रेम का सागर बनो तो विश्व को प्रेम का सागर बनावेंगे। अच्छा, अब विदाई।